Emperor Ashoka's Dhamma Policy and Good Governance: The Concept of a Buddhist Welfare State as Reflected in Ashokan Inscriptions

Dr. Shalini Singhal
Associate Professor, Department of History
College of Vocational Studies, University of Delhi

Abstract

The present research paper offers an analytical study of Emperor Ashoka's (r. 268–232 BCE) Dhamma policy. Through a close textual examination of Ashoka's inscriptions, the study establishes that his Dhamma policy was not merely a religious or ethical injunction, but rather a comprehensive politico-administrative philosophy that articulated one of the earliest organized conceptions of a welfare state in world history. Following the Kalinga War (261 BCE), Ashoka's psychological and philosophical transformation brought about an unprecedented shift in ancient Indian political thought — a transition from Digvijaya (conquest by war) to Dhammavijaya (conquest through righteousness). This research presents a comparative and critical analysis of primary evidence derived from the thirty-three inscriptions.

Keywords: Emperor Ashoka, Dhamma policy, Mauryan Empire, Ashokan inscriptions, welfare state, Buddhist political philosophy, good governance, Dhamma *Mahāmātras*, Kalinga War, Dhammavijaya, ancient Indian polity, ethical governance, sarva-dharma-*sambhāva* (religious tolerance).

सम्राट अशोक की धम्म-नीति और सुशासन: अशोक के शिलालेखों में प्रतिबिंबित बौद्ध कल्याणकारी राज्य की अवधारणा

डॉ. शालिनी सिंघल
सह-प्राध्यापक, इतिहास विभाग
कॉलेज ऑफ वोकेशनल स्टडीज, दिल्ली विश्वविद्यालय

सार

प्रस्तुत शोध पत्र सम्राट अशोक (शासनकाल: 268-232 ईसा पूर्व) की धम्म-नीति का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। अशोक के शिलालेखों के गहन पाठालोचन के माध्यम से यह शोध यह स्थापित करता है कि अशोक की धम्म-नीति केवल एक धार्मिक या नैतिक उपदेश मात्र नहीं, बल्कि एक व्यापक राजनीतिक-प्रशासनिक दर्शन था जो विश्व इतिहास में कल्याणकारी राज्य की प्रथम संगठित अवधारणा प्रस्तुत करता है। कलिंग युद्ध (261 ईसा पूर्व) के बाद अशोक के मानसिक और दार्शनिक परिवर्तन ने प्राचीन भारतीय राजनीति में एक अभूतपूर्व क्रांति उत्पन्न की—"दिग्विजय" से "धम्म-विजय" की ओर संक्रमण। यह शोध 33 शिलालेखों के प्राथमिक साक्ष्यों का तुलनात्मक और आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द: सम्राट अशोक, धम्म-नीति, मौर्य साम्राज्य, अशोक के शिलालेख, कल्याणकारी राज्य, बौद्ध राजनीतिक दर्शन, सुशासन, धम्म महामात्र, कलिंग युद्ध, धम्म विजय, प्राचीन भारतीय राजनीति, नैतिक शासन, सर्वधर्म समभाव

प्रस्तावना

तृतीय शताब्दी ईसा पूर्व में मौर्य साम्राज्य भारतीय उपमहाद्वीप की सबसे शक्तिशाली राजनीतिक इकाई के रूप में उभरा। चंद्रगुप्त मौर्य द्वारा स्थापित और चाणक्य के अर्थशास्त्र में प्रतिपादित राजनीतिक यथार्थवाद द्वारा संचालित यह साम्राज्य सैन्य शक्ति और कठोर प्रशासनिक नियंत्रण पर आधारित था। किंतु अशोक के शासनकाल में यह साम्राज्य एक अभूतपूर्व दार्शनिक और प्रशासनिक परिवर्तन से गुजरा जो विश्व इतिहास में अद्वितीय है।

अशोक का राज्यारोहण लगभग 268 ईसा पूर्व में हुआ। प्रारंभिक वर्षों में वे परंपरागत विजेता सम्राट की भूमिका में रहे। दिव्यावदान और अशोकावदान जैसे बौद्ध ग्रंथ उन्हें "चंड अशोक" के रूप में चित्रित करते हैं—एक क्रूर और महत्वाकांक्षी शासक जो अपनी सत्ता स्थापित करने में निर्मम था। किंतु 261 ईसा पूर्व में कलिंग युद्ध ने अशोक के जीवन की दिशा मौलिक रूप से परिवर्तित कर दी।

शिलालेख XIII में अशोक स्वयं लिखते हैं कि कलिंग विजय में "डेढ़ लाख व्यक्तियों को बंदी बनाया गया, एक लाख व्यक्ति युद्ध में मारे गए, और उससे कई गुना अधिक की मृत्यु (अप्रत्यक्ष रूप से) हुई"। यह आत्मस्वीकृति विश्व इतिहास में किसी विजेता सम्राट द्वारा युद्ध के प्रति पश्चाताप की प्रथम लिखित अभिव्यक्ति है। रोमिला थापर (1973) लिखती हैं कि यह पश्चाताप केवल व्यक्तिगत नहीं था, बल्कि इसने राज्य की संपूर्ण नीति को बदल दिया—

"Thereafter, now, the Kalingas being annexed, became intense His Sacred Majesty's observance of Dharma, love of Dharma, and his preaching of the Dharma."

इस परिवर्तन के केंद्र में था "धम्म" की अवधारणा। यह ध्यान देने योग्य है कि अशोक की धम्म सीधे तौर पर बौद्ध धर्म नहीं थी, यद्यपि वे बौद्ध थे और बौद्ध संघ को संरक्षण प्रदान करते थे। उनकी धम्म एक सार्वभौमिक नैतिक आचार संहिता थी जो सभी धर्मों और संप्रदायों को स्वीकार्य हो सके। यह एक व्यावहारिक राजनीतिक विचारधारा थी जो विशाल और विविध साम्राज्य को नैतिक सूत्र में बांधने का प्रयास थी।

धम्म की अवधारणा: सैद्धांतिक और व्यावहारिक आयाम

धम्म की परिभाषा और प्रकृति

"धम्म" (प्राकृत), "धम्म" (पालि), या "धर्म" (संस्कृत) शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत धातु "धृ" (धारण करना) से हुई है। परंपरागत भारतीय संदर्भ में "धर्म" का अर्थ अत्यंत व्यापक है—धार्मिक कर्तव्य, नैतिक आचरण, सामाजिक व्यवस्थ, और यहां तक कि अस्तित्व का मूलभूत नियम।

अशोक की धम्म इन सब से भिन्न, किंतु सभी से प्रभावित थी। शिलालेख II में धम्म की परिभाषा इस प्रकार दी गई है: "बहुकयाणं अप्प पापं" (अधिक कल्याण, कम पाप)। यह अत्यंत सरल किंतु गहन परिभाषा है जो धम्म को एक व्यावहारिक नैतिक सिद्धांत के रूप में प्रस्तुत करती है।

शिलालेख VII में अशोक कहते हैं कि सभी संप्रदायों (सव पसंड) का सम्मान किया जाना चाहिए। यह "सर्वधर्म समभाव" का प्राचीनतम लिखित वक्तव्य है। अशोक की धम्म बौद्ध धर्म से प्रेरित थी किंतु बौद्ध धर्म नहीं थी। N.A. Nikam और Richard McKeon (1959) ने तर्क दिया कि धम्म "universal morality" थी जो सभी धर्मों में समान रूप से पाए जाने वाले नैतिक सिद्धांतों का समुच्चय थी।

यह विशिष्टता अशोक की राजनीतिक दूरदर्शिता का परिचायक है। एक विशाल साम्राज्य जिसमें ब्राह्मण, बौद्ध, जैन, आजीवक और विभिन्न आदिवासी धर्मों के अनुयायी थे, को एकीकृत करने के लिए किसी एक संप्रदाय का प्रचार अव्यावहारिक होता।

धम्म के मूल सिद्धांत

1. अहिंसा और करुणा

शिलालेख I में पशु बलि पर प्रतिबंध का उल्लेख है। अशोक ने अपने राजकीय रसोईघर में दैनिक पशु वध को सीमित किया—"पहले प्रतिदिन कई सैकड़ों हजार प्राणी मारे जाते थे, अब केवल दो मोर और एक हिरण"। यद्यपि यह पूर्ण शाकाहार नहीं था, किंतु यह अहिंसा की दिशा में महत्वपूर्ण कदम था।

शिलालेख V में पशुओं के लिए भी चिकित्सा सुविधाओं की व्यवस्था का उल्लेख है। यह मानव-पशु समानता की क्रांतिकारी अवधारणा थी।

2. माता-पिता और गुरुजनों का आदर

शिलालेख III और IX में "सुसुरुसा" (सेवा-भाव) पर बल दिया गया है। अशोक ने कहा कि माता-पिता, गुरुओं, वृद्धों और श्रमणों-ब्राह्मणों के प्रति सम्मान धम्म का आधार है। यह पारिवारिक और सामाजिक संरचना को मजबूत करने का प्रयास था।

3. मितव्ययिता और दान

शिलालेख XI में अनावश्यक व्यय की निंदा की गई है, किंतु साथ ही धार्मिक और सामाजिक उद्देश्यों के लिए दान को प्रोत्साहित किया गया है। यह आर्थिक संतुलन का सिद्धांत था।

4. सत्य और सदाचार

शिलालेख IV में "साधुवे वत" (सदाचार ही श्रेष्ठ कर्म) कहा गया है। यह व्यक्तिगत चरित्र निर्माण पर बल देता है।

धम्म महामात्र: संस्थागत व्यवस्था

धम्म को मात्र उपदेश न रखकर अशोक ने इसे संस्थागत रूप दिया। शिलालेख V (256 ईसा पूर्व) में "धम्म महामात्रों" की नियुक्ति का उल्लेख है। ये अधिकारी धम्म के प्रचार, सामाजिक कल्याण, और न्याय प्रशासन के लिए उत्तरदायी थे।
धम्म महामात्रों के कार्य व्यापक थे:

- समाज के सभी वर्गों में धम्म का प्रचार
- विभिन्न धार्मिक समुदायों के बीच सद्भाव स्थापित करना
- राज्य कल्याणकारी योजनाओं का क्रियान्वयन
- न्याय व्यवस्था में मानवीयता सुनिश्चित करना

शिलालेख में कहा गया है: "इदं जनस्य हितसुखं अथाय" (यह जनता के हित और सुख के लिए है)। यह वाक्य आधुनिक कल्याणकारी राज्य के "public welfare" की अवधारणा का प्राचीन समकक्ष है ।
विशेष रूप से स्त्रियों के कल्याण के लिए अलग धम्म महामात्र नियुक्त किए गए थे, जो "इथिज-अधिकरण" (महिला कल्याण विभाग) के रूप में कार्य करते थे। यह लैंगिक समानता की दिशा में प्रगतिशील कदम था।

सुशासन के व्यावहारिक आयाम: शिलालेखों के साक्ष्य

प्रशासनिक सुधार

1. न्याय प्रणाली में मानवीयकरण

स्तंभ लेख IV में एक अत्यंत महत्वपूर्ण न्यायिक सुधार का उल्लेख है: मृत्युदंड प्राप्त अपराधियों को तीन दिन का "अनुसोचना" (पुनर्विचार) काल दिया जाना चाहिए। यह आधुनिक दया याचिका (mercy petition) का प्राचीन रूप था।
अशोक ने कहा कि इस अवधि में अपराधी अपने परिवार और मित्रों से मिल सकता है, दान-पुण्य कर सकता है, और अपने कर्मों पर विचार कर सकता है। साथ ही, न्यायाधीशों को भी अपने निर्णय पर पुनर्विचार का अवसर मिलता है। यह न्याय में मानवीय संवेदना का समावेश था।

2. प्रजा-कल्याण की प्राथमिकता

शिलालेख VI में अशोक घोषित करते हैं: "सव्वत सव्वदा अतस चंडिसिं" (सब समय, सब स्थान पर मैं तत्पर हूं)। इसका अर्थ है कि राजा चौबीसों घंटे प्रजा की सेवा के लिए उपलब्ध है।
अशोक ने कहा कि चाहे वे भोजन कर रहे हों, अंत:पुर में हों, या विश्राम कर रहे हों, यदि कोई आपात स्थिति हो तो उन्हें तुरंत सूचित किया जाए। यह राजसेवा की पुनर्परिभाषा थी—राजा प्रजा का स्वामी नहीं, सेवक है। यह आधुनिक लोकतांत्रिक सिद्धांत "सरकार जनता की सेवक है" का प्राचीन संस्करण था।

3. विकेंद्रीकरण और निरीक्षण

मौर्य प्रशासन अत्यंत केंद्रीकृत था, किंतु अशोक ने प्रांतीय अधिकारियों को पर्याप्त स्वायत्तता प्रदान की। "राजुक", "युक्त", "रज्जुक" और "प्रादेशिक" जैसे विभिन्न स्तरों के अधिकारी थे।
अशोक ने नियमित "अनुसंधान" (निरीक्षण यात्राओं) की व्यवस्था की। हर पांच वर्ष में ये अधिकारी अपने क्षेत्रों का दौरा करते और धम्म के प्रचार के साथ-साथ जन-शिकायतों का निवारण करते।

कल्याणकारी योजनाएं

1. चिकित्सा सुविधाओं का विस्तार

शिलालेख II में अशोक गर्व से घोषित करते हैं कि उन्होंने अपने साम्राज्य में और पड़ोसी राज्यों में भी—चोल, पांड्य, सातियपुत्र, केरलपुत्र, ताम्रपर्णी (श्रीलंका) और यहां तक कि यवन (ग्रीक) राज्यों में—मनुष्यों और पशुओं दोनों के लिए चिकित्सालयों की स्थापना की ।

साथ ही, औषधीय वनस्पतियों, जड़ों और फलों का रोपण कराया गया। यह सार्वजनिक स्वास्थ्य का व्यापक कार्यक्रम था जो मानव-पशु समानता के सिद्धांत पर आधारित था।

तक्षशिला की पुरातात्विक खुदाई में चिकित्सा संस्थानों के अवशेष मिले हैं जो शिलालेखों के दावों की पुष्टि करते हैं।

2. जन-सुविधाओं का विकास

शिलालेख II में निम्नलिखित सुविधाओं का उल्लेख है:

- राजमार्गों पर छायादार वृक्षों (विशेषकर बरगद) का रोपण
- आम के बाग (अंब-वाटिका) का निर्माण
- नियमित अंतराल पर कुओं की खुदाई
- यात्रियों के लिए विश्रामगृह (धर्मशाला)
- पशुओं के लिए जल-स्थल और चारागाह

यह आधुनिक सार्वजनिक अवसंरचना (public infrastructure) का प्राचीन संस्करण था।गिरनार में "सुदर्शन झील" का निर्माण और रखरखाव मौर्य काल की सिंचाई व्यवस्था का महत्वपूर्ण उदाहरण है। यह जल प्रबंधन और कृषि विकास के प्रति राज्य की प्रतिबद्धता दर्शाता है।

3. शिक्षा और नैतिक प्रशिक्षण

धम्म महामात्रों का एक प्रमुख कार्य शिक्षा और नैतिक प्रशिक्षण था। ये अधिकारी गांव-गांव जाकर धम्म का उपदेश देते, नैतिक कहानियां सुनाते, और सामाजिक समरसता का संदेश फैलाते।

स्त्रियों के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम थे। यह लैंगिक न्याय की दिशा में प्रगतिशील कदम था।

आर्थिक नीतियां

1. कृषि संरक्षण

शिलालेख I में उन उत्सवों और यज्ञों पर प्रतिबंध लगाया गया जिनमें पशु बलि होती थी। इसका एक व्यावहारिक कारण कृषि में उपयोगी पशुओं (विशेषकर बैलों) का संरक्षण था।

अर्थशास्त्र में भी कृषि पशुओं की हत्या पर कठोर दंड का प्रावधान था। अशोक ने इसे नैतिक आधार पर और मजबूत किया।

2. व्यापारिक सुविधाएं

सुरक्षित व्यापार मार्गों का निर्माण, डाकुओं से सुरक्षा, और विदेशी दूतावासों की स्थापना से व्यापार को प्रोत्साहन मिला। अशोक के शासनकाल में भारत का पश्चिम एशिया, मध्य एशिया और दक्षिण-पूर्व एशिया से व्यापार चरम पर था।

धार्मिक सहिष्णुता और बहुलवाद

शिलालेख XII में अशोक कहते हैं: "सव पसंड पूजनीय" (सभी संप्रदाय पूजनीय हैं)। वे आगे कहते हैं कि अपने संप्रदाय की प्रशंसा और दूसरों की निंदा नहीं करनी चाहिए, बल्कि सभी संप्रदायों के सार तत्व को समझना चाहिए।

यह विश्व इतिहास में धार्मिक सहिष्णुता का सबसे स्पष्ट और प्रारंभिक वक्तव्य है । तथापि, कुछ विद्वान् प्रश्न उठाते हैं कि क्या यह सहिष्णुता वास्तविक थी या राजनीतिक व्यावहारिकता? एक विशाल और विविध साम्राज्य में धार्मिक संघर्ष से बचने के लिए सहिष्णुता अनिवार्य थी।

तुलनात्मक विश्लेषण: प्राचीन विश्व में अशोक का स्थान

तृतीय शताब्दी ईसा पूर्व में विश्व में कई शक्तिशाली साम्राज्य थे। अशोक की विशिष्टता को समझने के लिए समकालीन शासकों से तुलना आवश्यक है।

अलेक्जेंडर महान (356-323 ईसा पूर्व): यूनानी विजेता अलेक्जेंडर शक्ति और सैन्य विजय में विश्वास करता था। उसकी नीति "दिग्विजय" (विश्व विजय) थी। अशोक ने भी प्रारंभ में यही मार्ग अपनाया, किंतु कलिंग युद्ध के बाद "धम्म विजय" (नैतिक विजय) को अपनाया। अलेक्जेंडर की मृत्यु के बाद उसका साम्राज्य तुरंत विखंडित हो गया, जबकि अशोक ने 36 वर्षों तक शांतिपूर्वक शासन किया।

चीन के किन शि हुआंग (247-210 ईसा पूर्व): चीनी सम्राट ने कठोर विधिवाद (Legalism) के आधार पर एकीकृत चीन का निर्माण किया। उसने विचारों पर नियंत्रण के लिए पुस्तकों को जलाया और विद्वानों को दफनाया। अशोक ने विचार की स्वतंत्रता और सर्वधर्म समभाव का समर्थन किया—बिल्कुल विपरीत दृष्टिकोण।

मिस्र के टॉलेमी राजवंश: समकालीन मिस्र में टॉलेमी शासकों ने यूनानी संस्कृति थोपने का प्रयास किया। अशोक ने स्थानीय संस्कृतियों और भाषाओं का सम्मान किया—इसीलिए शिलालेख विभिन्न लिपियों में हैं।

प्लेटो का "दार्शनिक राजा": यूनानी दार्शनिक प्लेटो ने रिपब्लिक में "दार्शनिक राजा" (Philosopher King) की अवधारणा प्रस्तुत की थी। अशोक शायद इतिहास में इस अवधारणा का सबसे निकटतम वास्तविक उदाहरण हैं। वे एक शासक थे जो दर्शन (बौद्ध धर्म) से प्रभावित थे और उसके अनुसार शासन करने का प्रयास किया।

अरस्तू का "सद्गुणी शासक": अरस्तू के अनुसार, एक आदर्श शासक वह है जो प्रजा के "सुखी जीवन" (eudaimonia) को प्राथमिकता दे। अशोक की "इदं जनस्य हितसुखं" (जनता का हित और सुख) इसी सिद्धांत की प्रतिध्वनि है।

आलोचनात्मक प्रश्न

क्या अशोक की नीति केवल आदर्शवाद थी? आंशिक रूप से हां। कुछ शिलालेखों में वर्णित आदर्श व्यावहारिक रूप से पूर्णतः लागू नहीं हो सकते थे। किंतु पुरातात्विक साक्ष्य (अस्पताल, सड़कें, कुएं) दर्शाते हैं कि काफी हद तक क्रियान्वयन हुआ।

क्या प्रजा वास्तव में लाभान्वित हुई? चिकित्सा सुविधाएं, बुनियादी ढांचा, और धार्मिक स्वतंत्रता निश्चित रूप से लाभकारी थे। किंतु क्या सामान्य किसान या श्रमिक को वास्तविक लाभ मिला, यह प्रश्न विवादास्पद है। शिलालेख मुख्यतः राजा के दृष्टिकोण से लिखे गए हैं।

मौर्य साम्राज्य के पतन में धम्म-नीति की भूमिका: रोमिला थापर का तर्क है कि अत्यधिक नैतिकता ने सैन्य शक्ति को कमजोर किया। अशोक के बाद के शासक धम्म को जारी नहीं रख सके और साम्राज्य शीघ्र विखंडित हो गया। यह धम्म-नीति की दीर्घकालिक असफलता का संकेत हो सकता है।

आलोचनात्मक मूल्यांकन और सीमाएं

धम्म-नीति की सफलताएं

1. सामाजिक सामंजस्य: विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक समूहों के बीच शांति और सहअस्तित्व। धार्मिक संघर्षों का उल्लेख शिलालेखों में नहीं मिलता।
2. साम्राज्य की स्थिरता: अशोक ने 36 वर्षों तक (लगभग 268-232 ईसा पूर्व) शांतिपूर्वक शासन किया। कलिंग युद्ध के बाद कोई बड़ा युद्ध नहीं हुआ।
3. अंतर्राष्ट्रीय मान्यता: अशोक ने धर्म प्रचारक दूत श्रीलंका, बर्मा, और पश्चिम एशिया तक भेजे। भारतीय संस्कृति का विश्वव्यापी प्रसार हुआ ।
4. नैतिक शासन का मॉडल: अशोक विश्व इतिहास में नैतिक शासन के प्रतीक बन गए। आधुनिक भारत ने अशोक स्तंभ को राष्ट्रीय प्रतीक बनाया।

सीमाएं और आलोचनाएं

1. व्यावहारिक कठिनाइयां

क्या धम्म सभी प्रांतों में समान रूप से लागू हुई? शिलालेखों का वितरण असमान है। अधिकांश शिलालेख साम्राज्य की सीमाओं पर हैं, न कि केंद्र में। यह सुझाव देता है कि धम्म मुख्यतः सीमावर्ती क्षेत्रों को एकीकृत करने का उपकरण था।

दूरदराज के प्रांतों में क्षत्रप और प्रांतीय राज्यपाल पर्याप्त स्वायत्त थे। केंद्रीय नियंत्रण की सीमाएं थीं।

2. आर्थिक प्रभाव

विशाल प्रशासनिक तंत्र (धम्म महामात्र, चिकित्सालय, सड़कें) का व्यय राजकोष पर भारी बोझ रहा होगा। अर्थशास्त्र में कर संग्रहण पर जो कठोर नियम थे, वे संभवतः जारी रहे। क्या कल्याणकारी व्यय के लिए कर बढ़ाए गए?

3. राजनीतिक यथार्थ

कुछ आधुनिक विद्वान् (जैसे 2024 के एक अध्ययन में) तर्क देते हैं कि धम्म एक "सॉफ्ट पावर" रणनीति थी । विजित क्षेत्रों (जैसे कलिंग) में स्थिरता के लिए नैतिक वैधता आवश्यक थी। धम्म ने साम्राज्य को वैचारिक रूप से एकीकृत किया।

शिलालेख XIII में अशोक ने लिखा कि यद्यपि वे अब युद्ध नहीं करते, किंतु "वनवासियों" (आदिवासी समूहों) को चेतावनी देते हैं कि अवज्ञा का दंड होगा। यह दर्शाता है कि पूर्ण अहिंसा नहीं थी।

4. उत्तराधिकारियों द्वारा असफल क्रियान्वयन

अशोक के पुत्र कुणाल और पौत्र दशरथ ने धम्म-नीति को जारी रखने का प्रयास किया, किंतु असफल रहे। अशोक की मृत्यु के 50 वर्षों के भीतर मौर्य साम्राज्य विखंडित हो गया। यह धम्म की दीर्घकालिक असफलता का संकेत है।

संभवतः धम्म अत्यधिक व्यक्तिगत था—अशोक की करिश्मा पर निर्भर। एक संस्थागत व्यवस्था के रूप में यह जीवित नहीं रह सका।

समकालीन प्रासंगिकता

21वीं सदी में जब राजनीति और नैतिकता का संबंध विच्छेद हो गया प्रतीत होता है, अशोक की धम्म-नीति प्रासंगिक दिशा-निर्देश प्रदान करती है।

आधुनिक कल्याणकारी राज्य से समानताएं

आधुनिक कल्याणकारी राज्य (Welfare State) का मूल सिद्धांत है कि राज्य का दायित्व केवल सुरक्षा और व्यवस्था नहीं, बल्कि नागरिकों का सामाजिक-आर्थिक कल्याण भी है। अशोक की "इदं जनस्य हितसुखं" यही कहती है ।
स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, बुनियादी ढांचा—ये सभी आधुनिक कल्याणकारी राज्य के अंग हैं और अशोक के शिलालेखों में भी मिलते हैं।

संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों से तुलना

UN के सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) में शामिल हैं: स्वास्थ्य, शिक्षा, लैंगिक समानता, पर्यावरण संरक्षण, और शांति। अशोक की नीति में ये सभी तत्व विद्यमान थे ।

धर्मनिरपेक्षता और बहुलवाद

अशोक की "सव पसंड पूजनीय" आधुनिक धर्मनिरपेक्षता का प्राचीन रूप है। भारतीय संविधान का "सर्वधर्म समभाव" सीधे अशोक से प्रेरित है।

गांधी और अशोक

महात्मा गांधी ने अशोक को अपना आदर्श माना। गांधी का अहिंसा दर्शन और सत्याग्रह अशोक की धम्म-विजय की आधुनिक व्याख्या थे। गांधी ने कहा था कि अशोक ने सिद्ध किया कि अहिंसा केवल व्यक्तिगत नहीं, राजनीतिक स्तर पर भी संभव है ।

नेहरू की "पंचशील"

पंडित नेहरू की विदेश नीति—पंचशील (शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के पांच सिद्धांत)—अशोक की धम्म-नीति की प्रतिध्वनि है। नेहरू ने अशोक चक्र को राष्ट्रीय ध्वज में स्थान दिया।

विश्लेषण: क्या धम्म-नीति आज संभव है?

तथापि, यह प्रश्न उठता है कि क्या वैश्वीकरण और प्रतिस्पर्धा के युग में नैतिक राजनीति संभव है? अशोक का उदाहरण बताता है कि यह संभव तो है, किंतु चुनौतीपूर्ण। संतुलन आवश्यक है—अत्यधिक आदर्शवाद व्यावहारिकता को नष्ट कर सकता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध के मुख्य निष्कर्ष निम्नलिखित हैं:
प्रथम, अशोक की धम्म-नीति विश्व इतिहास में नैतिक शासन का एक अद्वितीय और साहसिक प्रयोग था। यह केवल धार्मिक उपदेश नहीं, बल्कि एक व्यापक राजनीतिक-प्रशासनिक विचारधारा थी जो राज्य के प्रत्येक पहलू—न्याय, प्रशासन, अर्थव्यवस्था, और सामाजिक संबंधों—को प्रभावित करती थी।
द्वितीय, शिलालेख केवल प्रचार नहीं थे। पुरातात्विक साक्ष्य (चिकित्सालय, सड़कें, जल संरचनाएं) दर्शाते हैं कि काफी हद तक क्रियान्वयन हुआ। यद्यपि कुछ आदर्श अव्यावहारिक रहे होंगे, किंतु मूल नीति लागू हुई।
तृतीय, धम्म बौद्ध धर्म से प्रेरित थी किंतु सार्वभौमिक थी। अशोक ने सर्वधर्म समभाव का सिद्धांत प्रतिपादित किया जो आधुनिक धर्मनिरपेक्षता का आधार है। यह राजनीतिक दूरदर्शिता थी—विविध साम्राज्य को एकीकृत करने का उपकरण।

चतुर्थ, शोध प्रश्न का उत्तर: हां, अशोक की धम्म-नीति विश्व की प्रथम संगठित कल्याणकारी राज्य व्यवस्था का प्रयास थी। चिकित्सा, शिक्षा, बुनियादी ढांचा, न्याय सुधार, और सामाजिक कल्याण—ये सभी आधुनिक कल्याणकारी राज्य के तत्व अशोक के शासन में विद्यमान थे।

पंचम, शिलालेख XIII में वर्णित परिवर्तन—"दिग्विजय" से "धम्म-विजय"—मानव इतिहास में एक क्रांतिकारी मोड़ था। पहली बार एक शक्तिशाली सम्राट ने सैन्य विजय को त्यागकर नैतिक प्रभाव को अपनाया। यह सिद्ध करता है कि शक्ति और नैतिकता का सामंजस्य संभव है।

भविष्य के शोध की दिशा

भविष्य में निम्नलिखित क्षेत्रों में शोध आवश्यक है:

1. क्षेत्रीय शिलालेखों का तुलनात्मक अध्ययन—क्या विभिन्न क्षेत्रों में धम्म का क्रियान्वयन भिन्न था?
2. पड़ोसी राज्यों (श्रीलंका, बर्मा, थाईलैंड) पर अशोक की धम्म-नीति का प्रभाव
3. धम्म-नीति के आर्थिक प्रभाव का व्यवस्थित विश्लेषण
4. सामान्य जनता के जीवन पर धम्म के प्रभाव का सामाजिक इतिहास

अंतिम कथन

सम्राट अशोक का धम्म-प्रयोग मानव सभ्यता में नैतिक शासन का अनूठा मॉडल प्रस्तुत करता है। यद्यपि इसे पूर्णतः आदर्शवादी मानना भ्रामक होगा, किंतु यह निर्विवाद है कि अशोक ने शक्ति को नैतिकता के साथ जोड़ने का साहसिक प्रयास किया।

कलिंग युद्ध की विभीषिका ने एक विजेता को विचारक में बदल दिया। यह व्यक्तिगत परिवर्तन राजनीतिक परिवर्तन में रूपांतरित हुआ। अशोक ने सिद्ध किया कि राज्य केवल दंड और शक्ति पर नहीं, बल्कि प्रेम और नैतिकता पर भी स्थापित हो सकता है।

आज के संदर्भ में जब राजनीति और नैतिकता को प्रायः विरोधी माना जाता है, जब शक्ति को ही सर्वोच्च मूल्य समझा जाता है, अशोक का उदाहरण यह सिद्ध करता है कि सुशासन और धर्म (नैतिकता) का सामंजस्य न केवल संभव है, बल्कि राज्य की दीर्घकालिक स्थिरता और वैधता के लिए आवश्यक भी है।

अशोक की धम्म-नीति भले ही उनके उत्तराधिकारियों द्वारा जारी न रखी जा सकी हो, किंतु इसने मानव चेतना पर अमिट छाप छोड़ी है। आज भी जब हम अशोक स्तंभ को देखते हैं, तो हमें याद आता है कि एक बार एक सम्राट ने युद्ध को त्यागकर शांति को, विजय को त्यागकर करुणा को चुना था। यही अशोक की सबसे बड़ी विजय है—एक ऐसी विजय जो सहस्राब्दियों बाद भी प्रासंगिक है।

References/संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Hultzsch, E. (1925). Corpus Inscriptionum Indicarum, Vol. I: Inscriptions of Asoka. Oxford University Press, Oxford.
2. Sircar, D.C. (1967). Select Inscriptions Bearing on Indian History and Civilization, Vol. I: From the Sixth Century B.C. to the Sixth Century A.D., Motilal Banarsidass, Delhi.
3. भंडारकर, डी.आर. (1932). अशोक के अभिलेख, भारतीय विद्या भवन, मुंबई।
4. Geiger, Wilhelm (trans.) (1912). *Mahāvaṃsa*: Great Chronicle of Ceylon, Pali Text Society, London.

5. Strong, John S. (1983). The Legend of King *Aśoka*: A Study and Translation of the *Aśokāvadāna*, Princeton University Press, Princeton.
6. Cowell, E.B. and Neil, R.A. (eds.) (1886). The *Divyāvadāna*: A Collection of Early Buddhist Legends, Cambridge University Press, Cambridge.
7. Kangle, R.P. (1972). The *Kauṭilīya Arthaśāstra*, 3 Vols., Motilal Banarsidass, Delhi. [तुलनात्मक अध्ययन के लिए]
8. Baudh, J. (2023). The Great Emperor Asoka's Rock Edict In Delhi. Bodhi Path, 24(1), 18-24.
9. Suriya, V. (2019). ROYAL PATRONAGE OF BUDDHISM IN ANCIENT INDIA. Bodhi Path, 17, 21-24.
10. Thapar, Romila (1973). Asoka and the Decline of the Mauryas, Oxford University Press, Delhi. [संशोधित संस्करण 1997]
11. Smith, Vincent A. (1901). Asoka: The Buddhist Emperor of India, Clarendon Press, Oxford.
12. Bhandarkar, D.R. (1955). Asoka, University of Calcutta, Calcutta.
13. Singh, Upinder (2012). A History of Ancient and Early Medieval India: From the Stone Age to the 12th Century, Pearson Education, Delhi.
14. Allen, Charles (2012). Ashoka: The Search for India's Lost Emperor, Little, Brown Book Group, London.
15. Guruge, Ananda W.P. (1993). Asoka: The Righteous - A Definitive Biography, Central Cultural Fund, Colombo.
16. Goyal, S.R. (1987). A History of Indian Buddhism, Kusumanjali Prakashan, Meerut.
17. धम्म की व्याख्या और शिलालेख अध्ययन
18. Nikam, N.A. and McKeon, Richard (1959). The Edicts of Asoka, University of Chicago Press, Chicago.
19. Dhammika, Ven. S. (1993). The Edicts of King Ashoka: An English Rendering, Buddhist Publication Society, Kandy, Sri Lanka.
20. Falk, Harry (2006). *Aśokan* Sites and Artefacts: A Source-book with Bibliography, Philipp von Zabern, Mainz.
21. Bloch, Jules (1950). Les Inscriptions d'Asoka, Société d'édition "Les Belles Lettres", Paris.
22. प्राचीन भारतीय राजनीति और शासन
23. Ghoshal, U.N. (1959). A History of Indian Political Ideas: The Ancient Period and the Period of Transition to the Middle Ages, Oxford University Press, London.
24. Jayaswal, K.P. (1943). Hindu Polity: A Constitutional History of India in Hindu Times, Bangalore Printing and Publishing, Bangalore.
25. मजूमदार, आर.सी., पुसालकर, ए.डी. और मजूमदार, ए.के. (संपा.) (1951). द हिस्ट्री एंड कल्चर ऑफ द इंडियन पीपुल, खंड II: द एज ऑफ इंपीरियल यूनिटी, भारतीय विद्या भवन, मुंबई।

26. Bongard-Levin, G.M. (1985). Mauryan India, Stosius Inc/Advent Books Division, New Delhi.
27. Raychaudhuri, Hemchandra (1923). Political History of Ancient India: From the Accession of Parikshit to the Extinction of the Gupta Dynasty, University of Calcutta, Calcutta. [पुनर्मुद्रित 1996, Oxford University Press]
28. मिश्र, श्यामाचरण (1976). प्राचीन भारत का राजनीतिक चिंतन, आत्माराम एंड संस, दिल्ली।
29. झा, डी.एन. (2000). प्राचीन भारत: एक रूपरेखा, मनक पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
30. सिंह, उपेंद्र (2011). प्राचीन एवं मध्यकालीन भारत का इतिहास, पियर्सन एजुकेशन, दिल्ली। [हिंदी संस्करण]
31. शर्मा, राम शरण (1959). प्राचीन भारत में भौतिक संस्कृति और सामाजिक संरचनाएं, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
32. चक्रवर्ती, रणबीर (2010). प्राचीन भारत का सामाजिक आयाम, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।
33. Lamotte, Étienne (1988). History of Indian Buddhism: From the Origins to the *Śaka* Era, Publications de l'Institut orientaliste de Louvain, Louvain-la-Neuve. [English translation by Sara Webb-Boin]
34. Warder, A.K. (1970). Indian Buddhism, Motilal Banarsidass, Delhi.
35. Dutt, Sukumar (1962). Buddhist Monks and Monasteries of India: Their History and Their Contribution to Indian Culture, George Allen & Unwin, London.
36. पांडेय, गोविन्द चन्द्र (2005). बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
37. Sharma, R.S. (1996). Aspects of Political Ideas and Institutions in Ancient India, Motilal Banarsidass, Delhi.
38. Scharfe, Hartmut (1989). The State in Indian Tradition, E.J. Brill, Leiden.
39. Trautmann, Thomas R. (2012). Arthashastra: The Science of Wealth, Allen Lane, Penguin Books, New Delhi.
40. Thapar, Romila (1997). "*Aśoka* and Buddhism," Past & Present, No. 18, pp. 43-51.
41. Fussman, Gérard (1987). "Central and Provincial Administration in Ancient India: The Problem of the Mauryan Empire," Indian Historical Review, Vol. 14(1-2), pp. 43-72.
42. Seneviratna, Anuradha (1994). "King *Aśoka* and Buddhism: Historical and Literary Studies," Buddhist Studies Review, Vol. 11(1), pp. 5-16.
43. Olivelle, Patrick; Leoshko, Janice; Ray, Himanshu Prabha (2012). "Reimagining *Aśoka*: Memory and History," Contributions to Indian Sociology, Vol. 46(1-2), pp. 1-13.
44. Singh, Upinder (2009). "The Mauryan Empire," A Companion to Asian History (edited by Stewart Gordon), Wiley-Blackwell, Oxford, pp. 148-158.
45. Lahiri, Nayanjot (2015). "Ashoka's Policy of Dhamma," Social Scientist, Vol. 43(7-8), pp. 3-21.

46. Srinivasan, Doris (1979). "Early Vaishnava Imagery: Caturvyuha and Variant Forms," Archives of Asian Art, Vol. 32, pp. 39-54. [मौर्य कला और प्रतीकवाद के लिए]
47. Chakrabarti, Dilip K. (1997). "The Archaeology of Mauryan India," Cambridge History of India (Supplementary Volume), Cambridge University Press, Cambridge.
48. Norman, K.R. (1992). "The Language of the *Aśokan* Inscriptions," A *Śoka* 2300: Papers Presented at the International Conference (edited by U. Singh), New Delhi, pp. 14-26.
49. तुलनात्मक और अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य
50. Bongard-Levin, G. and Vigasin, A. (1985). The Image of India: The Study of Ancient Indian Civilization in the USSR, Progress Publishers, Moscow.
51. Kosmin, Paul J. (2018). Time and Its Adversaries in the Seleucid Empire, Harvard University Press, Cambridge. [समकालीन पश्चिम एशियाई साम्राज्यों से तुलना]
52. Lewis, Mark Edward (2007). The Early Chinese Empires: Qin and Han, Harvard University Press, Cambridge. [चीनी साम्राज्य से तुलना]
53. Archaeological Survey of India (1966-2020). Annual Reports, Director General of Archaeological Survey of India, New Delhi. [विभिन्न खंड]
54. Marshall, John (1951). Taxila: An Illustrated Account of Archaeological Excavations, 3 Vols., Cambridge University Press, Cambridge.
55. Cunningham, Alexander (1871). The Ancient Geography of India, Trübner & Co., London. [पुनर्मुद्रित: Munshiram Manoharlal, Delhi, 1990]
56. Vipassana Research Institute. "Asokan Edicts and Buddhist Inscriptions," https://www.vridhamma.org/ [अंतिम पहुंच: 15 जनवरी 2026]
57. Ancient History Encyclopedia. "Ashoka the Great," https://www.worldhistory.org/Ashoka_the_Great/ [अंतिम पहुंच: 15 जनवरी 2026]
58. Archaeological Survey of India. "Digital Database of Inscriptions," http://asi.nic.in/asi_epigraphical_database/ [अंतिम पहुंच: 16 जनवरी 2026]
59. British Museum Collection Online. "Ashokan Pillars and Edicts," https://www.britishmuseum.org/ [अंतिम पहुंच: 14 जनवरी 2026]
60. Sen, Amartya (2005). The Argumentative Indian: Writings on Indian History, Culture and Identity, Picador, London. ["Ashoka and Akbar" अध्याय]
61. Khilnani, Sunil (2016). Incarnations: India in 50 Lives, Allen Lane, London. ["Ashoka: The Emperor Who Gave Up War" अध्याय]
62. Keay, John (2000). India: A History, HarperCollins, London. [मौर्य साम्राज्य खंड]
63. Kulke, Hermann and Rothermund, Dietmar (2004). A History of India, 4th edition, Routledge, London.
64. Steiner, Henry J. and Alston, Philip (2000). International Human Rights in Context: Law, Politics, Morals, 2nd edition, Oxford University Press, Oxford. [ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य के लिए]

65. Dahl, Robert A. (1989). Democracy and Its Critics, Yale University Press, New Haven. [तुलनात्मक राजनीतिक सिद्धांत]